'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 22 अंक 1 19 मार्च 2018 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

पथप्रेरक का 22वें वर्ष में प्रवेश

इस अंक के साथ आपका पथप्रेरक 22वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। आप सभी पाठकों का प्रेम एवं उत्साहवर्धन उत्तरोत्तर श्रेष्ठता की ओर गतिमान होने की प्रेरणा देता है एवं साथ ही दायित्वबोध को भी दृढ़ करता है। इसी दायित्व बोध के कारण ही सामाजिक विषयों पर पथप्रेरक सदैव सावधानीपूर्वक आपकी आवाज बनने का प्रयास करता है और आप सब के सहयोग एवं आशीर्वाद से भविष्य में भी बना रहेगा। आप सब पथप्रेरक के पाठक ही नहीं बल्कि संवाददाता भी आप ही हैं और इसको विस्तार देने वाले भी आप ही हैं, पूर्ण विश्वास है कि इस वर्ष में भी आप अपना यह सहयोग बदस्तूर जारी रखकर इसे अपने नाम की सार्थकता सिद्ध करने में सहयोग करेंगे।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'प्रहलाद के स्मरण का पर्व है होली'

होली का पर्व होलिका के नहीं बल्कि प्रहलाद के स्मरण का पर्व है। यह पर्व हमारे अंतर में लगी ईश्वरीय लग्न की प्रहलाद रूपी नींव के विरुद्ध अवरोध पैदा करने वाली वृत्तियों के विनाश का प्रतीक है और इन्हीं प्रवृत्तियों की प्रतीक है होलिका जिसका हम दहन करते हैं। इस प्रकार इस पर्व का सही नाम होलिका दहन है। यदि इसके प्रचलित नाम पर विचार करें तो होली का अर्थ है जो हो चुकी अर्थात् अब तक जो हमसे गलत हो चुका उसका स्मरण करने की अपेक्षा उसका दहन करें और अंतर पर प्रभु प्रेम के प्रतीक के रूप में बैठे प्रहलाद का रक्षण करें। उस लग्न को प्रहलाद की तरह मजबूत करें। यदि वह लग्न दृढ़ से दृढ़तर होती जाएगी तो असंभव भी संभव होता जाएगा जैसे नहीं जलने का वरदान प्राप्त होलिका भी जल जाएगी। पत्थर में भी प्रभु प्रकट हो जाएंगे। इसलिए इस पर्व पर स्मरण करें तो प्रहलाद की उस लग्न का स्मरण करें और अपने जीवन में उसे आमंत्रित करें। संघशक्ति परिसर में 1 मार्च को आयोजित होली स्नेहमिलन को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि होली को हुड़दंग का पर्व बना दिया गया और हम भी संसार का अनुसरण करने लगे। जब-जब हमने संसार के पीछे चलना प्रारम्भ किया है, हमारा व संसार दोनों का पतन हुआ है क्योंकि यह पतन का मार्ग है। अतीत में हम संसार का नहीं बल्कि संसार हमारा अनुसरण करता था और इसीलिए हमने सावधानीपूर्वक उच्च प्रतिमान स्थापित किए क्योंकि हमें इस बात का दायित्व बोध था कि संसार हमें देख रहा है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

गुजरात प्रशासनिक सेवा परीक्षा परिणाम

राजस्थान के प्रवीण सिंह की तीसरी रैंक

12 मार्च को जारी गुजरात प्रशासनिक सेवा परीक्षा के परिणाम में कुल अनारक्षित 168 पदों में से 23 पर राजपूत चयनित हुए हैं। इस परीक्षा में तीसरी रैंक पर चयनित प्रवीणसिंह जेतावत पाली जिले के गुड़ा चुतरा गांव के निवासी हैं। इनके पिता 1987 से ही सूरत में किराणा का व्यवसाय करते हैं। प्रवीणसिंह ने इससे पहले 2014 में कॉमर्शियल टैक्स इंस्पेक्टर परीक्षा में सातवीं रैंक एवं फरवरी 2018 में कॉमर्शियल टैक्स सर्विस परीक्षा में 11वीं हासिल की थी। इनके ससुर श्रवणसिंह बड़गांव सिरोही जिले में संघ के सहयोगी हैं एवं इनकी पत्नी राजश्री कंवर राजावत ने संघ के शिविर किए है। (शेष पृष्ठ 8 पर)

मुद्दों की समझ को लेकर चिंतन बैठक

विगत दिनों विभिन्न मुद्दों को लेकर समाज आंदोलित हुआ। इससे पहले भी ऐसे अनेक मुद्दे समाज में हलचल पैदा कर चुके हैं और भविष्य में भी करते रहेंगे। जीवित समाज का यह लक्षण है कि वह प्रतिक्रिया व्यक्त करता है और व्यक्त की भी जानी चाहिए। लेकिन जिन मुद्दों को लेकर प्रतिक्रिया व्यक्त की जानी चाहिए उनके बारे में यदि प्रचलित व्यवस्था के अनुरूप समझ नहीं हो तो अपेक्षित परिणाम नहीं मिलते और कई बार तो परिणाम विपरीत भी आ जाते हैं। विगत दिनों में ऐसा हुआ भी है। युवा जोश होश का नियंत्रण अस्वीकार कर मुद्दों की समझ के अभाव में भटक जाता है और परिणाम स्वरूप स्वयं की एवं समाज की छवि को हानि पहुंचाता है। इस स्थिति से समाज के अनेक समझदार लोग चिंतित हैं। व्यक्तिगत बातचीत में हर कोई इस पर चिंता व्यक्त करता रहता है। ऐसी ही चिंताओं को लेकर एक चिंतन बैठक श्री क्षत्रिय युवक संघ के केन्द्रीय कार्यालय संघ शक्ति में करने की कुछ युवाओं ने माननीय संघ प्रमुख श्री से अनुमति मांगी। अनुमति मिलने पर 4 मार्च को सायं 4 बजे एक ऐसी चिंतन बैठक का आयोजन किया गया जिसमें जयपुर, सीकर, झुंझुनूं, चुरु, नागौर, बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर, जालोर, पाली, सिरोही, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, अजमेर आदि जिलों के आमंत्रित युवाओं ने भागीदारी निभाई। बैठक के प्रारम्भ में विषय को स्पष्ट करते हुए बताया गया कि जो समझता है उसका दायित्व है कि वह अन्यों को समझाए। गलत करने वाले को गलत के लिए टोक कर सही मार्ग न बताना भी उन लोगों के लिए ठीक नहीं है जो जानते हैं कि गलत हो रहा है। हम प्रायः युवाओं को दोष देते हैं लेकिन दोष देने वालों का भी यह दायित्व बनता है कि वे युवाओं तक सही बात को पहुंचाए नहीं तो उन्हें दोष देना भी व्यर्थ है, क्योंकि उनके सामने जो उपलब्ध है वे उसे ही अपनाते हैं। इस विषय पर चर्चा आरंभ हुई। चर्चा में यशवर्धनसिंह झेरली, श्रवणसिंह सान्या, सुरेन्द्रसिंह ख्याली, राजेन्द्रसिंह देणोक, नरपतसिंह वोपारी, नरेन्द्रसिंह गिंगोली, रुपेन्द्रसिंह करीरी, लोकेन्द्रसिंह लाडपुरा, रामसिंह चरकड़ा, राजेन्द्रसिंह भिंयाड़, अरविन्दसिंह बालवा, नारायणसिंह गोटन, कर्नल नारायणसिंह बेलवा, जब्बरसिंह गिड़ा, नवीनसिंह भवाद, भवानीसिंह, गजेन्द्रसिंह मानपुरा, श्रवणसिंह दासपां, श्याम प्रताप सिंह इटावा, विमलेन्द्रसिंह राणावत, श्रीपालसिंह शक्तावत आदि ने बोलते हुए कहा कि हम सबको गलत को गलत कहने का साहस जुटाना पड़ेगा। बुरा बोलने के डर से बाहर निकलना पड़ेगा। समाज के आधार पर शॉर्टकर्ट अपना कर राजनीति करने की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करना पड़ेगा।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

असाधारण लोग अपनी असाधारणता को छिपाकर साधारण लोगों के सामने साधारण आचरण कर उन्हें असाधारण बनाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं वहीं साधारण लोग अपनी साधारणता को छिपाकर असाधारण बनने के चक्कर में साधारण भी नहीं रह पाते और मजाक का पात्र बन जाते हैं। पूज्य तनसिंह जी असाधारण व्यक्तित्व थे और उन्होंने अपनी असाधारणताओं को सामाजिक न्यास बनाकर दृढ़तापूर्वक उनके व्यक्तिगत उपयोग से परहेज किया एवं साधारण बन अपने साथियों को असाधारण बनाने का प्रयास करते रहे। ऐसी ही एक घटना सन् 1962-63 की है जब पूज्य श्री भारतीय संसद के सदस्य थे। जोधपुर की चौपासनी स्कूल के पास स्थित एक तालाब पर चौपासनी शाखा का एक कार्यक्रम था जिसमें जोधपुर शहर में रहने वाले स्वयंसेवक भी अपनी -अपनी साईकिल लेकर पहुंचे। पूज्य श्री उन दिनों जोधपुर आए हुए थे इसलिए वे भी उस कार्यक्रम में पधारे। आते समय उन्हें कोई कार्यक्रम स्थल तक छोड़कर गया लेकिन कार्यक्रम के पश्चात् वे शहर से आए स्वयंसेवकों के साथ ही जोधपुर आने की उद्यत हुए। एक स्वयंसेवक ने उनसे अपनी साईकिल पर बैठकर चलने का निवेदन किया तो वे उन स्वयंसेवक की साईकिल लेकर चलाने लगे एवं उन स्वयंसेवक को आगे बिठा लिया। उन स्वयंसेवक ने स्वयं चलाने का आग्रह किया लेकिन पूज्य श्री ने मना कर दिया। वे स्वयंसेवक कुछ अस्वस्थ भी थे। चौपासनी से जोधपुर तक पहले शहर इतना घना बसा हुआ नहीं था। लेकिन ज्यों ही शहर में प्रवेश किया प्रत्येक चौराहे पर खड़ा ट्रेफिक पुलिस का सिपाही भारतीय संसद में जैसलमेर-बाड़मेर जैसे सबसे बड़े लोकसभा क्षेत्र के प्रतिनिधि को सेल्युट करने लगा। आगे डंडे पर बैठे स्वयंसेवक सकुचा भी रहे थे तो गौरवान्वित भी हो रहे थे। चौपासनी से लेकर पावटा स्थित हणवंत राजपूत हॉस्टल तक के उस सफर ने उन स्वयंसेवक को असाधारणता में साधारण बने रहने की ऐसी सीख दी कि आज वे स्वयंसेवक हम सबके लिए असाधारण स्वयंसेवक होकर भी साधारणता के प्रतीक हैं। हम सबके आदर्श हैं।

जीवनोपयोगी जानकारी-1

अभयसिंह रोड़ला

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में दसवीं कक्षा छात्र जीवन का एक अति महत्त्वपूर्ण पड़ाव है। दसवीं कक्षा तक का शिक्षण सभी छात्रों हेतु समान तथा सभी विषयों की आधारभूत जानकारी प्रदान करने वाला होता है। इससे आगे की शिक्षा विशिष्ट तथा चयनित होती है, जो छात्र के कॅरियर को दिशा प्रदान करने का कार्य करती है। इस नाजुक समय पर छात्र की अदूरदर्शिता अथवा अभिभावकों की अनभिज्ञता के कारण यदि दिशा का चयन ठीक न हो तो छात्र अपने भावी जीवन में अपनी योग्यता व महत्त्वाकांक्षा के अनुरूप रोजगार व जीवन स्तर प्राप्त नहीं कर सकेगा। अतः दसवीं कक्षा के पश्चात् विषय चयन में अभिभावकों तथा छात्रों के सहयोग हेतु यहां कुछ आवश्यक जानकारियां उपलब्ध करवाई जा रही हैं। दसवीं कक्षा के पश्चात् चयन हेतु विषयों के चार वर्ग उपलब्ध होते हैं, जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

(1) **विज्ञान वर्ग :** यह देशभर में छात्रों द्वारा सर्वाधिक चुना जाने वाला वर्ग है। यह चिकित्सा तथा अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग) के साथ कम्प्यूटर विज्ञान के क्षेत्र में भी कॅरियर निर्माण का अवसर उपलब्ध करवाता है। विज्ञान वर्ग में भौतिक विज्ञान एवं रसायन विज्ञान का अध्ययन अनिवार्य है तथा इनके साथ जीव विज्ञान, गणित, भू-गर्भ-शास्त्र, कम्प्यूटर विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी, मल्टी मीडिया व वैब तकनीकी में से कोई एक विषय चुनना होता है। विषय-समूह की उपलब्धता में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा विद्यालय के आधार पर कुछ भिन्नता भी रहती है किन्तु मोटे रूप में यही व्यवस्था अधिकांशतः उपलब्ध है। विज्ञान विषय की लोकप्रियता का एक कारण यह भी है कि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी 12वीं कक्षा के पश्चात् वाणिज्य अथवा कला वर्ग का चयन कर सकते हैं परन्तु कला एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थी विज्ञान वर्ग का चयन नहीं कर सकते।

(2) **कृषि विज्ञान वर्ग :** इस वर्ग में कृषि विज्ञान एवं जीव-विज्ञान अनिवार्य है तथा भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित, कम्प्यूटर विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी, मल्टी मीडिया व वैब तकनीकी में से कोई एक विषय चुनना होता है।

(3) **वाणिज्य वर्ग :** वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के लिए चार्टेड एकाउन्टेंट, कम्पनी सचिव, वित्त सलाहकार जैसे प्रतिष्ठित एवं उच्च वेतन वाले पदों पर पहुंचने का अवसर उपलब्ध होता है। वाणिज्य वर्ग में सामान्यतः लेखा शास्त्र तथा व्यवसाय अध्ययन अनिवार्य विषय होते हैं, जिनके साथ अर्थशास्त्र, गणित, कम्प्यूटर, विज्ञान आदि विषयों में से किसी एक का चयन किया जा सकता है।

(4) **कला वर्ग :** इसमें मुख्यतः मानविकी विषय सम्मिलित किए जाते हैं। इसके अन्तर्गत राजनीति विज्ञान, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र, दर्शन शास्त्र, मनोविज्ञान, लोक-प्रशासन, भाषा साहित्य (अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, उर्दू सहित अनेक भाषाओं में से किसी भी भाषा का साहित्य), चित्रकला, संगीत, गृह विज्ञान आदि विषय आते हैं। पत्रकारिता, साहित्य, समाज कार्य, अध्यापन आदि क्षेत्रों में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों में यह वर्ग अधिक लोकप्रिय है। उपरोक्त सभी वर्गों में हिन्दी तथा अंग्रेजी अनिवार्य विषयों के रूप में रहते हैं। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अन्तर्गत इन सभी वर्गों में राजस्थान अध्ययन तथा जीवन-कौशल शिक्षा को अनिवार्य विषय के रूप में जोड़ा गया है। अगले अंक में विषय-चयन के समय ध्यान में रखे जाने वाले महत्त्वपूर्ण बिन्दु तथा तथ्यों का विश्लेषण किया जाएगा। **(क्रमशः)**

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

महाराजा हरिसिंह कश्मीर

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

कश्मीर अर्वाचीन काल से आर्यावृत का सिरमोर रहा है। यहां का प्राकृतिक नजारा स्वर्ग की परिकल्पना लगता है। कश्मीर पर प्राचीन काल से ही अनेकों राजवंशों ने राज्य किया है। उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ में कश्मीर पंजाब के सिक्ख राजा रणजीतसिंह के राज्य का हिस्सा था। 1819 ई. से लेकर 1845 ई. तक कश्मीर सिक्खों के अधीन था। जयपुर रियासत के सामन्त खंगरोत (कच्छवाह) की जागीर नरैना दूंदू के कुछ राजपूत महाराजा रणजीतसिंह की सेना में सैनिक के रूप में नौकरी करने पंजाब गए। अपनी बहादुरी के राजपूती गुण से उन्होंने महाराजा को बहुत प्रभावित किया। महाराजा ने गुलाबसिंह खंगारोत को कश्मीर का दीवान नियुक्त कर दिया। प्रथम सिक्ख अंग्रेज युद्ध के पश्चात् अमृतसर की संधि के अनुसार 1846 में जम्मू और कश्मीर पूर्ण रूप से गुलाबसिंह के अधिकार में आ गया। वे डोगरा सरदार कहलाने लगे। महाराजा गुलाबसिंह ने लद्दाख, कारगिल, गिलगित आदि अनेक दुर्गम स्थानों पर अपना अधिकार कर अपने राज्य का विस्तार किया। लद्दाख की राजधानी लेह में डोगरा शासक जोरावर सिंह द्वारा निर्मित किले में जम्मू से दुर्गम रास्तों से पहुंचाई गई चार तोपें उस साहसी वीर की अमर गाथा का बखान करती है। महाराजा रणवीरसिंह और महाराजा प्रतापसिंह जम्मू कश्मीर के प्रतापी शासक हुए हैं। 1924 ई. को निःसन्तान महाराजा प्रतापसिंह की मृत्यु के बाद उनके भतीजे महाराजा हरिसिंह गद्दी पर बैठे। वे बड़े प्रजा वत्सल एवं प्रतापी राजा थे। कश्मीर मुस्लिम बाहुल्य रियासत थी जिसके राजा हिन्दू राजपूत थे। देश की आजादी की सुगबुगाहट से पहले ही महाराजा हरिसिंह ने ठान लिया था कि वे कश्मीर को एक स्वतंत्र राज्य ही रखेंगे। वे इसे पूरब का स्वीटजरलैण्ड बनाना चाहते थे। महाराजा जवाहरलाल नेहरू एवं कांग्रेस को कम पसंद करते थे। नेहरू के साथी शेख अब्दुल्ला ने कश्मीर की जनता को भ्रमित करने का कार्य शुरू किया। वह नेहरू के सहयोग से कश्मीर का सदर बनना चाहता था। 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हो गया। महाराजा जिन्ना (पाकिस्तान) और नेहरू (भारत) दोनों के साथ जाना नहीं चाहते थे। जनता भी उनके साथ थी। गवर्नर जनरल लार्ड माउंट बेटन एवं महात्मा गांधी का महाराजा को मनाने का प्रयास भी विफल रहा। सभी भारतीय रियासतों का विलय भारत में करवाने वाले सरदार पटेल को नेहरू जी ने कश्मीर नहीं जाने दिया।

उधर पाकिस्तान की नजरें कश्मीर पर थी। पाक सेना एवं कबाइलियों ने कश्मीर में घुसपैठ शुरू कर दी, वे काफी अन्दर तक आ गए। महाराजा को मजबूरन भारत सरकार से मदद मांगनी पड़ी। महाराजा के प्रधानमंत्री मेहरचन्द महाजन (बाद में यूजीसी के चेयरमैन बने) भारत सरकार से वार्ता को दिल्ली आए। 26 अक्टूबर 1947 को महाराजा हरिसिंह ने देशी राज्यों के विलिनीकरण के सचिव वी.पी. मेनन के साथ 'इन्स्टूमेन्ट ऑफ एक्सेशन' पर हस्ताक्षर किए और जम्मू कश्मीर भारत का अंग बन गया। महाराजा हरिसिंह का उनकी जनता को बेहतर राज्य का तोहफा देना एक सपना ही रह गया। भारतीय सेना ने पाक कबाइलियों को कश्मीर से कई सैनिकों की कुर्बानी देकर भगा दिया। इस युद्ध में राजस्थान के वीर हवलदार मेजर पीरू सिंह शेखावत को परमवीर चक्र मिला। महाराजा हरिसिंह के पुत्र महान विद्वान डॉ. कर्णसिंह प्रखर राजनेता हैं। वे लोकसभा एवं राज्यसभा के सदस्य तथा बरसों तक केन्द्र में काबीना मंत्री तथा अमेरिका में भारत के राजदूत रहे हैं। उनके पुत्र विक्रमादित्य और अजातशत्रु राज्य की राजनीति में सक्रिय हैं। डॉ. कर्णसिंह जम्मू-कश्मीर के सदर-ए-रियासत (गवर्नर) रह चुके हैं।

उच्च प्रशिक्षण शिविर को लेकर बैठक

संघ के केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में 11 मार्च को केन्द्रीय कार्यकारियों, संभाग प्रमुखों एवं कुछ आमंत्रित स्वयंसेवकों की एक बैठक आगामी उच्च प्रशिक्षण शिविर को लेकर रखी गई। बैठक में उच्च प्रशिक्षण शिविर में आने वाले शिविरार्थियों की अर्हताओं को लेकर चर्चा की गई। बैठक के प्रारम्भ में बताया गया कि बेट द्वारिका शिविर में उच्च प्रशिक्षण शिविर के लिए अर्हताएं तय की गई थीं लेकिन प्रायः यह देखा गया कि अर्हताएं पूरी न कर पाने वाले स्वयंसेवकों का भी शिविर करने का आग्रह रहता है। ऐसे में सभी इच्छुक लोगों को उ.प्र.शि. करने के लिए क्या योजना बनाई जा सकती है इस पर विचार करने के लिए बैठक बुलाई गई है। सभी ने अपने-अपने विचार रखे। अंत में यह तय किया गया कि उ.प्र.शि. करने के इच्छुक व्यक्ति का न्यूनतम एक शिविर किया हुआ होना तो आवश्यक है। साथ ही जो भी शिविर करे उसे बीच में आने-जाने की छूट का प्रावधान नहीं होगा। उसे पूरा शिविर ही करना होगा। शिविर करने वाले विद्यार्थियों का न्यूनतम 10वीं की परीक्षा दिया होना आवश्यक है। विद्यार्थियों के अतिरिक्त व्यवसायी या नौकरी पेशा लोगों पर इस प्रकार का कोई बंधन लागू नहीं होगा। प्रत्येक शिविरार्थी हेतु काला निकर, सफेद शर्ट या टीशर्ट एवं काली जूती या जूता गणवेश के रूप में अनिवार्य है। साथ ही इस बात पर भी विचार किया गया कि शिविर में आने वाले विभिन्न स्तर के शिविरार्थियों हेतु स्तरानुसार शिक्षण की व्यवस्था की जाए। वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीरसिंह सरवड़ी ने कहा कि संघ का शिक्षण कोई एक पाठ्यक्रम नहीं है बल्कि संघ अभ्यास का मार्ग है इसलिए हर व्यक्ति को सदैव सभी स्तरों का शिक्षण जारी रखा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि संघ का शिक्षण गीता पर आधारित है और गीता के सभी मर्मज्ञ विद्वानों का कहना है कि उसे हर बार पढ़ने पर नया एवं अग्रेतर संदेश मिलता है उसी प्रकार संघ में भी जितना गहरा उतरेंगे उतना ही कम है। माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि पूज्य तनसिंह जी के संदेश को घर-घर तक पहुंचाने की पीड़ा हमें है, समाज को नहीं है, हमें समाज में वह पीड़ा जागृत करनी है। इस प्रकार इस काम को करने की गरज समाज को नहीं है हमें है इसीलिए हर परिस्थिति में जीवन भर इसी काम को करने का हमारा संकल्प ही हमें इस दिशा में आगे बढ़ा पाएगा। बैठक का संचालन संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास ने किया।

हरियाणा के कैथल में स्नेहमिलन

हरियाणा के कैथल जिले के राजौद तहसील मुख्यालय पर अमनसिंह राणा के आवास पर युवाओं का एक स्नेहमिलन रखा गया जिसमें संघ के स्वयंसेवक रेवतसिंह धीरा, जितेन्द्रसिंह देवली व अर्जुनसिंह सिसरवादा शामिल हुए। जितेन्द्रसिंह देवली ने क्षत्रियत्व के संरक्षण एवं विकास में संघ की भूमिका को स्पष्ट करते हुए बताया कि संघ अभ्यास का मार्ग है जिसके लिए शाखाएं एवं शिविरों का निरन्तर आयोजन आवश्यक है। रेवतसिंह धीरा ने संघ का परिचय दिया एवं पूज्य तनसिंह जी रचित एक सहगीत के माध्यम से उनकी पीड़ा को समझाने का प्रयास किया। स्थानीय युवाओं ने उनके यहां भी शिविर आयोजन का प्रस्ताव रखा जिसके लिए आसपास के गांवों में सम्पर्क यात्रा कर स्थान आदि तय करने का कार्यक्रम बना। स्नेहमिलन के आयोजन के लिए विक्रांतसिंह के प्रयास सराहनीय रहे।

क्षत्रिय सभा बीकानेर का होली मिलन

क्षत्रिय सभा बीकानेर का होली मिलन कार्यक्रम 11 मार्च को सभाध्यक्ष बजरंगसिंह रोयल की अध्यक्षता में सभा परिसर में रखा गया जिसमें विभिन्न सामाजिक विषयों पर चर्चा हुई। बीकानेर में समाज की संस्थाओं क्षत्रिय ट्रस्ट, शार्दुल राजपूत छात्रावास ट्रस्ट, करणी कन्या छात्रावास एवं क्षत्रिय सभा के कार्यों में समन्वय के लिए नरेन्द्रसिंह तंवर के संयोजन में एक समिति बनाई गई जिसमें कर्नल हेमसिंह, शम्भुसिंह थैलासर, इन्द्रसिंह थिरपाली, डॉ. नंदलालसिंह को सदस्य मनोनीत किया गया। करणी कन्या छात्रावास में बालिकाओं की संख्या बढ़ाने तथा निःशुल्क आवास व भोजन व्यवस्था के लिए कर्नल शिशुपालसिंह पंवार के संयोजन में सभा के सदस्यों की समिति बनाई गई। महाराणा प्रताप के नाम से पार्क का नामकरण करवाने पर युधिष्ठर सिंह भाटी का सम्मान किया गया एवं शांतिधाम शास्त्रीनगर व वीर दुर्गादास पार्क में नगर सुधार न्यास द्वारा कार्य करवाने में अग्रणी भूमिका निभाने पर सभा अध्यक्ष जी को साधुवाद दिया गया।

गुड़ा में होली स्नेहमिलन

झुंझुनूं जिले के गुड़ा गांव में राजपूत नवयुवक संघ की ओर से 4 मार्च को होली स्नेहमिलन रखा गया जिसमें सर्वसमिति से राजपूत समाज गुड़ा ने मृत्युभोज बंद करने का निर्णय लिया। कार्यक्रम में बालिका शिक्षा, राजपूत धर्मशाला बनवाने, संघ के शिविर लगवाने आदि विषयों पर चर्चा हुई। इस कार्यक्रम में संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक सुमेरसिंह गुड़ा, मंगलसिंह, पूर्व मंत्री राजेन्द्रसिंह, सरपंच महिपालसिंह, अमरसिंह, मदनसिंह आदि ने विचार रखे।

राठौड़ वंश की जानकारी आमंत्रित

सीकर जिले के मुण्डियावास निवासी गोविन्दसिंह द्वारा 'राठौड़ वंश का इतिहास' नामक पुस्तक प्रकाशित करवाई जा रही है जिसमें आदि नारायण से लेकर महाराजा गजसिंह द्वितीय तक क्रमबद्ध इतिहास के अलावा राठौड़ वंश में उत्पन्न वीरों, शासकों, देवपुरुषों, भक्तों, संतों एवं सतियों आदि का विस्तार से वर्णन उपलब्ध होगा। राठौड़ वंश की समस्त शाखा प्रशाखाओं का इतिहास भी इसमें उपलब्ध होगा। आपके पास इस इतिहास से संबंधित जानकारी या जनश्रुति हो तो निम्न पत्ते पर उपलब्ध करवाएं : गोविन्दसिंह, ग्राम-मुण्डियावास, वाया- दांता, जिला-सीकर-332 702, मोबाइल नम्बर : 9950794617

डेरिया में स्नेहमिलन

जोधपुर संभाग के शेरगढ़ प्रांत के स्वयंसेवकों द्वारा विद्यार्थियों से संवाद के लिए दिशाबोध नाम से मिलन आयोजित किए जाते रहे हैं। उसी श्रृंखला में विगत माह डेरिया में स्नेहमिलन रखा गया था। इस माह 11 मार्च रविवार को गांव के युवाओं ने स्वतः स्फूर्त स्नेहमिलन रखा एवं विगत माह की बैठक में हुई चर्चा को आगे बढ़ाने को लेकर चर्चा की। भोमसिंह, दिलीपसिंह, चतरसिंह, हेमसिंह आदि की इसमें अग्रणी भूमिका रही।

कैप्टन समदरसिंह बारां को श्रद्धांजलि

जोधपुर की बी.जे.एस. कॉलोनी के जोगमाया मंदिर में बी.जे.एस. हितकारिणी सभा के संस्थापक समदरसिंह बारां को श्रद्धांजलि दी गई।

राजपूत हॉस्टल जोधपुर के वार्डन रह चुके कैप्टन समदरसिंह का विगत दिनों देहावसान हुआ। 11 मार्च को रखी गई श्रद्धांजलि सभा में पूर्व सांसद नारायण सिंह माणकलाव, राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य शिवसिंह राठौड़, पार्षद भंवर कंवर, पार्षद चैनसिंह, पूर्व पार्षद रामसिंह सांजू, उम्मेदसिंह डाबडी, हनुमानसिंह खांगटा आदि लोगों ने कैप्टन साहब को समाज के कार्यों में अग्रणी रहने वाला बताते हुए उनसे संबंधित संस्मरण सुनाएं।

सार्थक हुई समाज की परिभाषा

समाज परिवार का ही बड़ा रूप है। परिवार की तरह ही समाज के लोगों का आपस में सुख-दुःख में सहयोगी बनना ही समाज में पारिवारिक भाव कहलाता है। हमारे समाज में ऐसी अनेक घटनाएं होती रहती है जो हमारे इस पारिवारिक भाव को पुष्ट करती हैं। ऐसी ही घटना नागौर जिले के भड़सिया गांव में 9 मार्च को हुई जब समाज ने अपने माता-पिता सहित अन्य पारिवारिक सहारे नियति के हाथों खो चुकी पूजा कंवर का विवाह आपसी सहयोग से किया। पूजा इस गांव की भाणजी है और पूरे गांव ने समाज के लोगों के सहयोग से धूमधाम से विवाह किया। इस आयोजन को सफल बनाने में गांव में कार्यरत ग्रामसेवक स्नेहकंवर ने अग्रणी भूमिका निभाई।

संपादकीय

अर्जुन, अभिमन्यु और अश्वत्थामा

महाभारत के ये तीनों पात्र तीन प्रकार की प्रवृत्तियों के प्रतीक हैं। ये तीनों ही क्षमतावान पुरुष थे, असाधारण योद्धा थे, विभिन्न प्रकार के शस्त्रों से संपन्न थे लेकिन तीनों की भूमिकाएं अलग-अलग रही और तीनों ही हमारे लिए तीन तरह के संदेश छोड़ कर गए हैं। अर्जुन ऐसे योद्धा का प्रतीक है जो भगवान कृष्ण की कृपा से परिस्थितियों को सदैव अपने नियंत्रण में रखता है। उसकी प्रत्येक गतिविधि की आधार भूमि धर्म की स्थापना होती है और इसीलिए भगवान कृष्ण उसके जीवन रथ के सारथी बन असंभव को भी संभव बनाते हैं। वे उसकी प्रतिज्ञा की रक्षा करने के लिए सूर्य को भी छिपा सकते हैं। अर्जुन के इसी धर्मयुक्त व्यवहार का परिणाम था कि उसने अपनी क्षमताओं को द्रोणाचार्य की शिक्षा तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि भगवान शिव से पाशुपति अस्त्र के साथ-साथ देवताओं को भी प्रसन्न कर विभिन्न देवास्त्र अर्जित किए। उसके अर्जन में धर्म मुख्य था इसलिए जो भी अर्जित किया पूर्ण रूप में अर्जित किया और जो भी अर्जन था उस पर उसका पूर्ण नियंत्रण था। शीर्षक में दूसरा नाम अभिमन्यु का है जो एक जागृत आत्मा का नाम है। इतना अधिक जागृत की गर्भ में ही अपने पिता और माता के वार्तालाप को ग्रहण कर लिया। फिर भगवान श्रीकृष्ण का शिष्यत्व अर्जित कर योद्धा के रूप में प्रशिक्षित होने का सौभाग्य भी उसे मिला। सदैव धर्मयुक्त वातावरण में रहा इसलिए धर्म की स्थापना के लिए अपनी वय एवं क्षमताओं से परे जाने को भी सदैव तैयार रहता है। महाभारत के युद्ध के दौरान सबसे कम वय होने के बावजूद पितामह भीष्म जैसे सर्वश्रेष्ठ योद्धा को भी रोकने का साहस रखता है और धर्म के पक्ष में होने से उत्पन्न आत्मविश्वास के कारण धर्म की स्थापना हेतु बड़े से बड़ा खतरा झेलने को तत्पर रहता है। इसी जोश, उत्साह और विश्वात्मा की आवश्यकता हेतु स्वयं को खपाने की तत्परता के कारण वह चक्रव्यूह भेदन जैसी कठिन परीक्षा में भी यह जानते हुए उतर जाता है कि उसे बाहर निकलना नहीं आता। परिणाम स्वरूप उसका स्वयं का जीवन तो खप जाता है लेकिन धर्म युद्ध में धर्म के पक्ष को पराजित होने से बचा लेता है। तीसरा चरित्र अश्वत्थामा का है जिसे पुत्र मोह में फंसे पिता का अंधा प्रेम मिलता है और उसी प्रेम के कारण वह भी अपने पिता द्रोणाचार्य से वह सब पाता है जो उन्होंने अर्जुन जैसे योग्य पात्र को दिया। बल्कि यह कहें तो भी गलत नहीं होगा कि अर्जुन से कुछ अधिक ही पाता है। उसके पास नारायण अस्त्र होता है जिसका वह अपने पिता के वध के बाद इस्तेमाल करता है और अर्जुन अपने गुरु का प्रिय एवं श्रेष्ठतम शिष्य घोषित होने के बावजूद उस अस्त्र से वंचित था। इस प्रकार अस्त्र-शस्त्रों के ज्ञान में अश्वत्थामा भी अर्जुन से बहुत ज्यादा कम नहीं था लेकिन वह ऐसा चरित्र नहीं है जिस पर अर्जुन या अभिमन्यु की तरह गर्व किया जा सके। प्रायः हम अभिमन्यु पर यह आरोप लगाते हैं कि वह निकलना नहीं जानता था फिर क्यों फंस गया लेकिन विचारणीय यह नहीं है कि वह निकलना नहीं जानता था बल्कि विचारणीय यह है कि उसने धर्म की रक्षार्थ अपनी क्षमताओं से बड़ा लक्ष्य चुना। वह अपनी जान तो नहीं बचा सका लेकिन धर्म को बचा लिया। हम हमारे आसपास भी अर्जुन, अभिमन्यु और अश्वत्थामा को पाते हैं और इससे भी आगे सोचें तो हम हमारे अंदर ही अर्जुन, अभिमन्यु और अश्वात्थामा को पाते हैं। जब हमारे अंतर में या हमारे आसपास का योद्धा भगवान के संरक्षण में अपनी संपूर्ण क्षमताओं को भगवदर्पण कर उसी के निर्देशन में प्राण-प्रण में लगता है तो हम अर्जुन की वृत्ति का सानिध्य पाते हैं और जहां ऐसी वृत्ति होती है वहां सदैव विजय होती है ऐसी भगवान व्यास की घोषणा है। यदि हम हमारे अंतर में या हमारे आसपास अपनी न्यून क्षमताओं को चिंता किए बिना सद्नीयत से धर्म की स्थापना बाबत् संघर्ष करने वाले योद्ध को पाते हैं तो निश्चित रूप से अर्जुन की सी श्रेष्ठता तो नहीं है लेकिन अर्जुन की विजय का मार्ग प्रशस्त करने का शुभ काम तो हो ही रहा है। अपने बूते से बाहर जाकर भगवान श्रीकृष्ण के शिष्यत्व एवं सानिध्य के कारण धर्म की स्थापना के लिए उपजी हूक को पूरा करने के लिए अपने जीवन तक की परवाह न करने वाले अनेक उदाहरण हमारे आसपास बिखरे पड़े हैं और ऐसे उदाहरण हमें निश्चित रूप से सदनियती से अपना शत प्रतिशत देने की प्रेरणा देते हैं। लेकिन इन दोनों वृत्तियों के बीच हमारे अंतर में या आसपास अश्वत्थामा का अस्तित्व भी बरकरार है। जिसकी योग्यता इतनी ही है कि वह पुत्रमोह में आबद्ध द्रोणाचार्य का पुत्र है और उसी योग्यता के बल पर वह सब हासिल करता है जो अर्जुन के लिए भी सुलभ नहीं है। लेकिन उनका उपयोग केवल और केवल अपने अंतर में पनपे दुर्योधन को सन्तुष्ट करने के लिए करता है। उसका लक्ष्य धर्म की स्थापना नहीं बल्कि अपने व्यक्तिगत सुख भोग, महत्वाकांक्षा, ईर्ष्या, क्रोध आदि की संतुष्टि के लिए कर्मशील होना होता है। उसकी इस प्रकार की कर्मशीलता में उसका नारायण अस्त्र बेकार चला जाता है। उसका ब्रह्मास्त्र उसकी स्वयं की दुर्गति का कारण बनता है और वह जीवन भर मणिविहीन कुत्सित जीवन जीने को मजबूर होता है। हमें अपने लिए निर्णय करना है कि हम हमारे अंतर में या हमारे आसपास अर्जुन सी श्रेष्ठता चाहते हैं या अभिमन्यु जैसा गौरवपूर्ण जीवन या मृत्यु चाहते हैं या फिर अश्वात्थामा जैसी कलंकित वृत्ति के प्रसार में संलग्न होना चाहते हैं?

मूर्तियों के बहाने भावनाओं का शोषण

विगत दिनों देश के अलग-अलग प्रदेशों में मूर्तियां टूटने के समाचार आए। उत्तर पूर्व में लेनिन की मूर्ति टूटने से प्रारम्भ हुआ सिलसिला दक्षिण में पेरियार की मूर्ति तक पहुंचा और कहीं अम्बेडकर की तो कहीं गांधी जी की मूर्ति को लेकर भी समाचार बने। अनेक लोगों का तर्क है कि मूर्तियां टूटने से भावनाएं आहत हुई या भावावेश में मूर्ति तोड़ी गई। भावना हृदय से पैदा होती हैं और हृदय में ही प्रेम, श्रद्धा आदि श्रेष्ठ गुणों का वास है। अब विचार करें कि यदि मूर्ति से भावना ही जुड़ी होती तो क्या उसे चौराहे पर खड़ा किया जाता जहां वर्ष में एक या दो बार उसकी सुध ली जाती है? यदि वे भावनाएं टूटने पर आहत होती है या बनाने पर पुष्ट होती हैं तो फिर तब आहत क्यों नहीं होती जब धूप व बारिश में उस मूर्ति का रंग फीका पड़ जाता है? वे तब आहत क्यों नहीं होती जब पक्षी उन पर बैठकर बींट करते हैं और बनाने वाले या मिटाने वाले उनके जन्म या मरण दिवस से पहले उन्हें देखते भी नहीं हैं? उनकी भावनाएं तब भी आहत नहीं होती जब अपराधी प्रवृत्ति के लोग रात के अंधेरे में इन मूर्तियों के नीचे बैठकर शराब पीते हैं? इन सब बातों का अर्थ यही निकलता है कि भावना की अपेक्षा कोई और वृत्ति है जो ये मूर्तियां तोड़ने और लगाने को बाध्य करती है और वह है हमारी बुद्धि। वस्तुस्थिति तो यह है कि मूर्ति लगाने या तोड़ने से प्राथमिक स्तर पर तो हमारा अहं संतुष्ट होता है और फिर बुद्धिवादी लोग हमारे इस अहं का सहारा लेकर हमारी भावनाओं का मूर्तियों के बहाने शोषण करते हैं और उसी शोषण की प्रक्रिया के तहत उन्मादी भीड़ मूर्ति लगाने या हटाने को उद्यत होती है। जबकि वे ही भावनाएं उस समय सुप्त होती हैं जब उन पर कबूतर बींट कर रहा होता है। विचार करें कि हमारे शासन तंत्र पर कब्जा जमाए बैठे बुद्धिवादी लोगों ने गांधीजी को हर चौराहे पर क्या किसी भावना के वशीभूत होकर खड़ा किया है? क्या हर शहर में चूने हुए चौराहों पर नीले परिधान में अम्बेडकर किसी भावना के वशीभूत होकर खड़े किए गए हैं? निश्चित रूप से उत्तर ना में ही आएगा।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

खरी-खरी

व्यक्ति और संस्था का चरित्र

हर संस्था या संगठन का अपना विशिष्ट चरित्र होता है जो उसके उद्देश्य, कार्य प्रणाली आदि से गढ़ा जाता है। संस्था के बाहर के लोगों का उस संस्था के प्रति दृष्टिकोण उसमें काम करने वाले लोगों के व्यवहार से तय होता है। संस्था का लक्ष्य एवं कार्य प्रणाली कितने ही श्रेष्ठ हो भले ही लेकिन उसमें काम करने वाले किसी व्यक्ति के व्यवहार से समाज उसके प्रति धारणा बना लेता है। लेकिन यहां समाज थोड़ा अनुदार हो जाता है और इस अनुदारता का खामियाजा उस संस्था को उठाना पड़ता है। माना कि चावल के उबलने की स्थिति को जांचने के लिए किसी एक चावल को निकाल कर देखा जाता है लेकिन चावल एक स्थूल वस्तु है जिसको एक निश्चित परिस्थिति उपलब्ध कराने पर समान ही व्यवहार करेगी लेकिन संस्थाओं का घटक मानव एक सजीव एवं क्रियाशील प्राणी है जो एक समान परिस्थिति में भी भिन्न-भिन्न व्यवहार कर सकता है या एक ही परिस्थिति में भिन्न-भिन्न लोग भिन्न-भिन्न व्यवहार कर सकते हैं इसलिए चावल के उबलने को जांचने वाली प्रक्रिया यहां समीचीन नहीं जान पड़ती। किसी भी संस्था के प्रति धारणा बनाने से पहले हमें उस संस्था के कुछ लोगों के व्यवहार को देखने की अपेक्षा उस संस्था के लक्ष्य, कार्य प्रणाली एवं क्रियाकलापों को देखना चाहिए। उस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु किए जाने वाले ईमानदार प्रयासों को देखना चाहिए और साथ ही इस बात की भी ईमानदारी रखनी चाहिए कि क्या हमारी स्वयं की क्षमता भी इतनी है कि किसी संस्था को बाहर से देखकर हम उसके चाल चरित्र के बारे में सटीक आकलन कर सकें। लेकिन इस विवरण का अर्थ यह कदापि नहीं है कि उस संस्था का वह व्यक्ति उस संस्था के प्रति आमजन का दृष्टिकोण बनाने में कहीं भी जिम्मेदार नहीं है। उपरोक्त बात संस्था से इतर लोगों पर लागू होती है कि वे आकलन में उदारता बरत कर हर पक्ष को देखें लेकिन उस संस्था के प्रत्येक सदस्य का तो यह निश्चित दायित्व है ही कि वह अपने आप को उस संस्था का जिम्मेदार सदस्य मानते हुए कोई ऐसा व्यवहार नहीं करे जिससे उस संस्था के प्रति लोगों का दृष्टिकोण दोषपूर्ण बने। वह यह मानकर चले कि उस संस्था का जिम्मेदार व्यक्ति बनने के उपरान्त उसका व्यक्तिगत जीवन अब उस संस्था के जीवन से जुड़ गया है ऐसे में उसकी प्रत्येक हलचल का दायरा अब स्वयं तक सीमित न होकर विस्तारित हो गया है और वह विस्तार उस पर अतिरिक्त दायित्व बोध आरोपित करता है।

संगठन की एक भी कमजोर कड़ी पूरे संगठन के लिए घातक होती है। कुछ ऐसा ही संदेश देता है शिविरों में खेला जाने वाला रस्सा-कस्सी खेल।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि.	29.03.2018 से 01.04.2018 तक	लाव लश्कर, देबारी घाटी, **उदयपुर**। सम्पर्क सूत्र : 94138-13601
2.	उ.प्र.शि.	11.05.2018 से 21.05.2018 तक	भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम, गेहूं रोड, **बाड़मेर**।
3.	विशेष शिविर	22.05.2018 से 25.05.2018 तक	भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम, गेहूं रोड, **बाड़मेर**।
4.	मा.प्र.शि. (बालिका)	28.05.2018 से 03.06.2018 तक	देवीकोट, जिला - **जैससमेर**। इस शविर में 8वीं कक्षा उत्तीर्ण तथा पूर्व में कम से कम एक शिविर की हुई बालिकाएं ही आ सकेंगी।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

गिरधरसिंह को पितृशोक

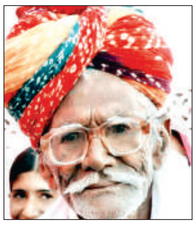

संघ के स्वयंसेवक एडवोकेट गिरधरसिंह जोगीदास का गांव के पिता चंदनसिंह का 78 वर्ष की उम्र में विगत 7 मार्च को देहावसान हो गया। स्वर्गीय चंदनसिंह के दोनों पुत्रों का परिवार संघ से जुड़ा हुआ है।

ईमानदार अधिकारी अमरसिंह कोछोर का देहावसान

राजस्थान पुलिस के पूर्व प्रमुख एवं अपनी ईमानदारी व सादगी के लिए विशिष्ट पहचान रखने वाले अमरसिंह शेखावत निवासी कोछोर जिला सीकर का 9 मार्च को देहावसान हो गया। श्री कोछोर 31 जुलाई 1979 से 9 फरवरी 1981 तक राजस्थान पुलिस के प्रमुख रहे। सेवानिवृत्ति के पश्चात गांव में ही सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत किया। राजस्थान पुलिस में उन्हें ईमानदारी का पर्याय माना जाता है।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

शहीद की सैनिक सम्मान से अंत्येष्टि

सीकर जिले के श्रीमाधोपुर के निकट गांव पृथ्वीपुरा के शंकरसिंह शेखावत कूपवाड़ा में शहीद हो गए। 9 मार्च को उनकी पार्थिव देह गांव पहुंची एवं 10 मार्च को पूरे सैनिक सम्मान के साथ उनकी अंत्येष्टि की गई। 28 वर्षीय शंकरसिंह जनवरी 2008 में सेना में भर्ती हुए थे एवं 2013 में उनका विवाह नीमकाथाना के बनेठी निवासी हीना कंवर से हुआ था। उनके एक ढाई वर्षीय पुत्री है। सैनिक दादोसा एवं सैनिक पिताजी की संतान शंकरसिंह के काकोसा भी सेना में कार्यरत है। देश की रक्षार्थ शहीद होने वाले अपने

क्षेत्र के लाडले की अंत्येष्टि में अंतिम विदाई देने गांव के साथ-साथ निकट के गांवों के लोग भी उमड़े।

रणजीतसिंह बने तीसरी बार अध्यक्ष

पाली जिले के छोटे से गांव धुंधला निवासी दिलीपसिंह एवं सरोज कंवर के सुपुत्र रणजीतसिंह ने इंग्लैण्ड के ब्रुनेल विश्वविद्यालय के छात्र संघ अध्यक्ष के रूप में लगातार तीसरी जीत हासिल की। करीब 15000 विद्यार्थियों वाले विश्वविद्यालय में सात प्रत्याशियों में से रणजीतसिंह ने 800 वोटों के अन्तर से जीत हासिल की। यहां लगभग 100 देशों के विद्यार्थी अध्ययनरत हैं और यह लंदन का सर्वश्रेष्ठ खेल विश्वविद्यालय माना जाता है। रणजीत यहां कानून की पढ़ाई कर रहे हैं।

गणपतसिंह अवाय को भ्रातृ शोक

संघ के स्वयंसेवक गणपतसिंह अवाय के

बड़े भ्राता अर्जुनसिंह का 76 वर्ष की उम्र में 8 मार्च को देहावसान हो गया। सात भाइयों में दूसरे अर्जुनसिंह आर.ए.सी. में डी.एस.पी. पद से सेवानिवृत थे।

भजन किसका करें?

महाकुम्भ के अवसर पर चण्डीद्वीप (हरिद्वार) में दिनांक 10.04.1983 ई. की जनसभा में परमपूज्य स्वामी श्री अड़गड़ानन्दजी का प्रवचन। 'भजन किसका करें' नामक छोटी सी पुस्तक में संग्रहित है। उसी पुस्तक को धारावाहिक रूप से यहां छापा जा रहा है।

बन्धुओं!

सागर-मन्थन के परिणाम में निकले अमृत-घट से कुछ अंश इन्हीं स्थानों पर छलक गया था, जहां कुम्भ-मेलों के आयोजनों का इतिहास है। ये आयोजन इसीलिए होते हैं कि उस अमृत-तत्त्व के शोध की विधि मिल जाए. यह नहीं कि मेले में आए, स्नान किया, दृश्य देखा और लौट गए। ये जो कुम्भ मेले लगते हैं, मात्र इतने के लिए ही लगते हैं कि धर्म के विषय में, इष्ट के विषय में, अपने कल्याण के रास्ते में हमारी जो भ्रान्तियां हैं, मिट जाए, संप्रति गीता और अन्य योगशास्त्रों के अनुसार एक परमात्मा और उसकी प्राप्ति की एक निर्धारित क्रिया के स्थान पर असंख्य पूजन-पद्धतियां प्रचलन में हैं। कोई कहता है गाय धर्म है, कोई कहता है पीपल धर्म है तथा कोई वर्ण और आश्रम का महत्त्व बताता है। अतः यह प्रश्न उलझता ही चला जाता है कि सनातन धर्म क्या है? आज का प्रश्न भी ऐसा ही है कि **इष्ट कौन है? भजन किसका करें?**

दुनिया में सबसे अधिक धार्मिक, भजन-चिन्तन करने वाला, पूजा-पाठ करने वाला हिन्दू ही है, परन्तु आश्चर्य की बात तो यह है कि धर्म के प्रति इतना आस्थावान हिन्दू जीवन के अन्तिम समय तक यह निश्चय ही नहीं कर पाता कि हमारा इष्ट कौन है? हम किसकी पूजा कर-के कल्याण को प्राप्त हो सकते हैं? इसके मूल में देखा जाए तो बहुदेववाद का प्रचार ही एकनिष्ठ होने में सबसे अधिक बाधक सिद्ध होता है। एक ही परिवार के दस सदस्य हैं तो सबके देवता अलग-अलग हैं। कोई हनुमान का भक्त है तो कोई शिव का, कोई देवी का तो कोई किसी अन्य देवता का। अपने-अपने देवी-देवताओं के लिए लोग एक-दूसरे से झगड़ा भी करते देखे जाते हैं। किसी को यह मालूम नहीं कि शाश्वत कौन है? किसकी उपासना से शाश्वत धाम की प्राप्ति होगी? अनेक देवी-देवता हमारे मन में इस प्रकार समा गए हैं कि अन्त समय तक हम किसी पर विश्वास ही नहीं टिका पाते। मृत्यु के समय जब लड़के आस-पास खड़े होकर कहते हैं कि दादा अब चिन्ता त्यागकर भगवान का स्मरण कीजिए तो दादा एक झटके से कह गुजरते हैं- हे हनुमान जी, दे दुर्गाजी, हे शीतला माई, हे विन्ध्यवासिनी देवी, हे मैहर वाली माता, हे हरसू ब्रह्म बाबा, हे शंकर जी अर्थात औसतन पच्चीस-तीस नामों का एक साथ स्मरण करने लगते हैं। इस तरह भ्रान्ति अन्त तक बनी रहती है तो भला '**एक मन्दिर दस देवता क्यों कर बसे बजार।**' हृदय एक मन्दिर है जो एक परमात्मा को अपने अन्दर स्थान दे सकता है, उसमें अनेक लोगों को स्थान नहीं दिया जा सकता। '**दुविधा में दोऊ गए, माया मिली न राम।**' अतः हृदय देश में किसी एक को बैठाना ही उचित होगा।

आइए देखें कि इस सन्दर्भ में हमारे पूर्व महापुरुषों ने क्या कहा? भगवान श्रीकृष्ण ने किसे इष्ट कहा? भगवान राम ने किसका भजन करने के लिए कहा? भगवान शिव ने किसका स्मरण करने का निर्देश दिया? स्वयं इन आप्तपुरुषों ने किसका चिन्तन किया? केवल इतनी ही बात आप ज्यों-का-त्यों मान लीजिए तो न सन्देह है और न भविष्य में होगा। खेद इस बात का है कि हम उस पर विचार ही नहीं करते। कदाचित् विचार आता भी है तो हम इतने भयभीत हैं कि इस विषय में अपने निर्णय को बदल नहीं पाते कि कहीं पुराने वाले देवता महाराज नाराज न हो जाएं, दुःख न दे दें।

देखें, इस विषय में योगेश्वर श्रीकृष्ण ने गीता में अपना स्पष्ट विचार प्रकट किया है -

मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम्।
नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः।।8/15

अर्जुन! मुझे प्राप्त होकर पुरुष क्षणभंगुर, दुःखों की खान पुनर्जन्म को नहीं प्राप्त होता है बल्कि वह पुरुष मुझे प्राप्त होता है। जो पुनर्जन्म में आता है वह दुःखों की खान है। केवल मुझे प्राप्त होकर उसका पुनर्जन्म नहीं होता बल्कि 'स्थानम् प्राप्स्यसि शाश्वतम्' वह शाश्वत सदा रहने वाला स्थान, परमधाम को पा जाता है। अब देखना है कि पुनर्जन्म में आता कौन-कौन है? -

आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन।
मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते।। गीता, 8/16

अर्जुन! ब्रह्मा से लेकर चौदहों भुवन, चराचर जगत् पुनरावर्ती स्वभाव वाला है किन्तु मुझे प्राप्त होने वाला पुरुष पुनर्जन्म को प्राप्त न होकर शाश्वत धाम को पा लेता है। स्पष्ट है कि ब्रह्मा और उनके द्वारा सृजित सारी सृष्टि मरणधर्मा है। इसके अन्दर देवता, पितर, दानव, ऋषि, सूर्य, चन्द्र सभी आ जाते हैं। मानव-जीवन का परम लक्ष्य है - अमरत्व की प्राप्ति। इस लक्ष्य की प्राप्ति श्रीकृष्ण के अनुसार एक परमात्मा के चिन्तन से ही सम्भव है। उदाहरणार्थ - आपको समुद्र पार करना है। आप किसी कागज के बण्डल का सहारा ले लें तो कुछ दूर जाने पर वह समाप्त हो जाएगा और आप डूब जाएंगे। इसी प्रकार अन्य कोई भी साधन, जो स्वयं डूबने वाला है, कमजोर है, उसे ग्रहण करके पार जाने की आशा करना दुराशा मात्र होगी। इसी प्रकार, जो स्वयं मरणधर्मा है, नश्वर है, वह आपको शाश्वत धाम नहीं दे सकता, अमरत्व नहीं दे सकता। हां, मृत्यु अवश्य दे सकता है। अतः एक परमात्मा का चिन्तन ही गीता का उपदेश है।

जब गीता के अनुसार देवता आशश्वत और दुःखों की खान हैं तो फिर उनकी पूजा क्यों होती है? इस पर भी श्रीकृष्ण ने बताया (अध्याय-7)- अर्जुन! जिनकी बुद्धि कामनाओं से आक्रान्त है, ऐसे मूढ़बुद्धियुक्त लोग ही अन्य देवताओं की पूजा करते हैं। वहां देवता नाम की कोई सक्षम वस्तु नहीं होती, किन्तु जहां भी- पानी में, पत्थर में, वृक्ष में लोगों की श्रद्धा झुकती है वहां पर मैं ही स्वयं खड़ा होकर उनकी श्रद्धा को पुष्ट करता हूं, फल का विधान करता हूं अर्थात् इन पूजने वाले को फल भी मिलता है, लेकिन वह भोगने में आकर नष्ट हो जाता है। रात-दिन श्रम तो किया लेकिन जो फल मिला वह भी नष्ट हो गया। सारा परिश्रम व्यर्थ हो जाता है।

भले ही नष्ट हो जाए, कुछ काल के लिए ही सही, फल तो मिलता है न! तो बुराई क्या है? इस पर अध्याय नौ में कहते हैं कि देवताओं को पूजने वाला भी मेरी ही पूजा करता है, किन्तु वह पूजन अविधिपूर्वक है इसीलिए नष्ट हो जाता है। सब कुछ त्याग करके, खून-पसीना एक करके आप पूजन में श्रम करते हैं और परिणाम यह निकला कि वह नष्ट हो गया - क्योंकि पूजन अविधिपूर्वक है। जब श्रम करना ही है तो विधिपूर्वक क्यों नहीं करते? रास्ता चलना ही है तो सही रास्ते से क्यों नहीं चलते?

यदि वह देवपूजन अविधिपूर्वक है तो विधि है क्या? इस पर अठारहवें अध्याय में कहते हैं कि, अर्जुन! अपने-अपने स्वभाव में पाई जाने वाली क्षमता के अनुसार नियत कर्म में लगा हुआ पुरुष (मनुष्य) जिस प्रकार भगवत् प्राप्ति रूपी परमसिद्धि को प्राप्त होता है, वह विधि तू मुझसे सुन! जिस परमात्मा से सब भूतों की उत्पत्ति हुई है, जिस परमात्मा से सम्पूर्ण जगत् व्याप्त है उस परमेश्वर को अपने स्वभाव से उत्पन्न क्षमता के द्वारा भली प्रकार अर्चन से सन्तुष्ट करके मनुष्य परमसिद्धि को प्राप्त होता है। अतः एक परमात्मा की पूजा ही विधि है। यह पूजन भी चिन्तन की एक निर्धारित क्रिया है। जिसमें श्वास का यजन, इन्द्रियों का संयम, यज्ञ स्वरूप महापुरुष का ध्यान इत्यादि क्रियाओं का समावेश है, जिसकी चर्चा योगेश्वर श्रीकृष्ण ने चौथे अध्याय के यज्ञ प्रकरण में तथा समूची गीता में स्थान-स्थान पर की है। आप इसे 'सनातन' शीर्षक वाले व्याख्यान में विस्तारित रूप से जान सकते हैं। आवश्यकता पड़ने पर पुनः पूछा जा सकता है।

अधिक नहीं, केवल एक परमात्मा के प्रति श्रद्धा और उस परमात्मा के किसी नाम ॐ अथवा राम का यदि आप जप करते हैं, तो (धर्म को न जानते हुए भी) आप शुद्ध धार्मिक हैं, सम्पूर्ण क्रिया को न जानते हुए भी आप क्रियावान् हैं। न इसका फल नष्ट होगा, न आप।

सम्पूर्ण गीता में योगेश्वर श्रीकृष्ण कहीं भी देवताओं का समर्थन नहीं करते। अध्याय नौ में ही वे कहते हैं कि कुछ लोग मुझे पूजकर स्वर्ग की कामना करते हैं, मैं उनको विशाल स्वर्गलोक के भोग देता हूं किन्तु वे '**क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति**'- पुण्य क्षीण हो जाने पर स्वर्ग से गिर जाते हैं लेकिन गिरने पर भी उनका विनाश नहीं होता, क्योंकि वे विहित कर्म से चलने वाले हैं, जो सही विधि है। अर्जुन! इस विहित कर्म में आरम्भ का नाश नहीं होता। साधक चलते-चलते कोई इच्छा कर भी ले तो भगवान उसकी पूर्ति करेंगे। वह वस्तु शाश्वत थी कब, इसीलिए वस्तु तो भोगने में आ जाती है, किन्तु उस भक्त का विनाश नहीं होता, क्योंकि वह विधिपूर्वक करने वाला है। वस्तुतः ब्रह्मा से उत्पन्न ब्रह्मलोक, देवलोक, पशु-कीट-पतंगादि लोक सभी भोग-योनियां हैं। केवल मनुष्य ही कर्मों का रचयिता है, जिसके द्वारा वह परमात्मा तक को प्राप्त कर सकता है, अपवर्ग साध सकता है। शरीर धारण के क्षेत्र में आप देवताओं से भी भाग्यशाली हैं, बढ़कर है, क्योंकि यह तन सुर-दुर्लभ है और आपको मिल चुका है। आप उनसे कौन-सी आशा करते हैं? आप देवता बन लें, ब्रह्मा की स्थिति प्राप्त कर लें, किन्तु पुनर्जन्म का सिलसिला तब तक नहीं टूटेगा जब तक मन के निरोध और विलय के साथ परमात्मा का साक्षात्कार करके उसी परमभाव में स्थित न हो जाएं। उसकी विधि है - **गीतोक्त विहित कर्म, उसे भजने की निश्चित क्रिया।**

सोलहवें अध्याय के अन्त में भगवान कहते है - अर्जुन! तू शास्त्र द्वारा निर्धारित किए हुए कर्म को कर। कौन-सा शास्त्र? कहीं अन्यत्र भटकने की आवश्यकता नहीं '**किमन्यैः शास्त्र विस्तरैः**' अन्य शास्त्रों के पचड़े से क्या प्रयोजन? भगवान ने स्वयं बताया - '**इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानध**' - (गीता, 15/20) अर्जुन। यह गोपनीय से भी अतिगोपनीय शास्त्र मैंने तेरे लिए कहा, अगले ही श्लोक में कहते हैं कि तेरे कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण है इसलिए तू शास्त्र द्वारा नियत कर्म को कर। जो शास्त्र-विधि को त्यागकर अपनी इच्छानुसार बरतता है उसके लिए न सुख है, न परम गति है, न लोक है और न परलोक। अतः आप सब गीता शास्त्र द्वारा नियत कर्म करें। भूत-भवानी की पूजा कर अपना यह लोक और परलोक न बिगाड़ें।

योगेश्वर श्रीकृष्ण के उपर्युक्त निर्देश पर अर्जुन ने जानना चाहा कि जो लोग शास्त्र-विधि को त्यागकर किन्तु श्रद्धापूर्वक भजते हैं उनकी कौन-सी गति होती है? भगवान् ने बताया कि अर्जुन। यह पुरुष श्रद्धामय है। कहीं न कहीं इसकी श्रद्धा अवश्य होगी। शास्त्र-विधि को त्यागकर भजने वालों की श्रद्धा तीन प्रकार की होती है - सात्विक श्रद्धा वाले देवताओं को, राजसी श्रद्धा वाले यक्ष-राक्षसों को और तामसी श्रद्धा वाले भूत-प्रेतों को पूजते हैं। ये तीनों केवल पूजते ही नहीं अथक परिश्रम करते हैं, घोर तप को तपते हैं, किन्तु अर्जुन। ये तीनों प्रकार की श्रद्धा वाले शरीर रूप में स्थित भूत समुदाय को और अन्तःकरण स्थित मुझ अन्तर्यामी परमात्मा को कृश करने वाले हैं। मुझसे दूरी पैदा करते हैं, न कि भजते हैं। अर्जुन! इन सबको तू असुर जान अर्थात् देवी-देवता को पूजने वाले भी असुर हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

(पृष्ठ छह का शेष) भजन....

असुर का मतलब क्या दो सींगवाला, बड़े-बड़े दांतों वाला कोई अजीब-विचित्र जीव। नहीं, परमदेव परमात्मा के देवत्व से जो वंचित रहने वाला है, वह असुर है। श्रीकृष्ण के अनुसार दुनिया में मनुष्य दो प्रकार का है - एक देवताओं-जैसा, दूसरा असुरों-जैसा। दैवी सम्पद् नामक गुणों को धारण करने वाला देवताओं-जैसा है और आसुरी सम्पद् वाला, दुर्गुणों को धारण करने वाला पुरुष असुरों-जैसा है। आपका एक सगा भाई देवता और दूसरा सगा भाई असुर हो सकता है। अस्तु, योगेश्वर कहते हैं कि इन सबको तू असुर जान! इससे अधिक कोई क्या कहेगा?

बन्धुओं! आपने इतना श्रम भी किया, शास्त्र-विधि को त्यागकर इतना तप भी तपा, परिणाम यह निकला कि उस परमदेव के देवत्व से वंचित हो गए, 'असुरजान'- असुर हो गए। जिस आत्मा को, परमात्मा को प्रसन्न करना था वह और भी दुर्बल और दूर हो गया। जब श्रम ही करना है तो इस तरीके से करें जिससे वह परमात्मा आपके अनुकूल हो, प्रतिकूल नहीं। क्यों न शास्त्र-विधि से नियत किए हुए कर्म को करें? अतः जिसके ये सभी अंशमात्र हैं उस मूल एक परमात्मा का भजन करें। इसी पर श्रीकृष्ण ने बारम्बार बल दिया है। एक परमात्मा का चिन्तन गीता का मूल उपदेश है।

अब इस चिन्तन का अधिकारी कौन है? 'हम तो बड़े पापी हैं, अर्जुन-जैसा भाग्य हमारा कहां?' कहीं ऐसी धारणा न बना लें। कहीं आप हताश होकर बैठ न जाए, इसीलिए योगेश्वर श्रीकृष्ण कहते हैं - अर्जुन!

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः।।गीता, 9/30

अत्यन्त दुराचारी भी यदि अनन्य अर्थात् अन्य न, मुझे छोड़कर अन्य किसी देवता को न भजते हुए केवल मुझे भजता है, वह साधु ही मानने योग्य है, क्योंकि वह यथार्थ निश्चय से लग गया है। **'क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शाश्वतछान्तिं निगच्छति'** - इस प्रकार लगने से वह शीघ्र ही धर्मात्मा बन जाता है, परमधर्म परमात्मा से संयुक्त अन्तःकरण वाला हो जाता है और सदा रहने वाली शाश्वत शान्ति को प्राप्त कर लेता है।

अतः आप अत्यन्त दुराचारी या दुराचारियों के सिरमौर ही क्यों न हों (अन्य बहुत से दुराचारों की योजना भी क्यों न बनाते हों), यदि एक परमात्मा के प्रति श्रद्धा और उस परमात्मा की प्राप्ति की क्रिया (यज्ञ की प्रक्रिया) नियत कर्म में श्रद्धा के साथ लगते हैं तो आप शीघ्र ही धर्मात्मा हो जाएंगे। **'कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति।'**- अर्जुन। तू निश्चियपूर्वक सत्य जान कि मेरा भक्त कभी नष्ट नहीं होता। अस्तु। अन्य किसी के पूजने का विधान नहीं है। **(क्रमशः)**

अजीतसिंह बने बास्केटबॉल टीम के मैनेजर

पोशान (चीन) में 2 से 8 अप्रेल तक होने वाली अंडर-16 एशियन बास्केटबॉल चैंपियनशिप के लिए भारतीय टीम का मैनेजर राजस्थान बास्केटबॉल संघ के सचिव अजीतसिंह को बनाया गया है। इस टीम का नेतृत्व बीकानेर के राजवीरसिंह करेंगे। ये विगत सितम्बर में नेपाल में आयोजित अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में गोल्ड मैडल जीतने वाली टीम का भी प्रतिनिधित्व कर चुके हैं।

(पृष्ठ एक का शेष)

प्रहलाद...

हमारी प्रत्येक हलचल संसार को प्रभावित करती है। इसी दायित्व बोध की आज भी आवश्यकता है कि हमारा व्यवहार संसार के व्यवहार को निर्धारित करता है। इसलिए यदि हम संसार को देखकर चल रहे हैं तो रुककर विचार करना चाहिए। श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी दायित्व बोध को जागृत करता है कि हमें संसार में श्रेष्ठताएं स्थापित करनी है तो स्वयं श्रेष्ठ बनना पड़ेगा ताकि हम संसार के सामने आदर्श स्थापित कर सकें। स्नेहमिलन के अवसर पर सभी स्वयंसेवकों ने एक दूसरे को रंग लगाकर शुभकामनाएं दी।

संघ शक्ति के अलावा संघ की अन्य शाखाओं में भी हर्षोल्लास से होली का पर्व मनाया गया।

मुद्दो की...

हमारे युवाओं के मन में देश की वर्तमान व्यवस्था को लेकर जो नकारात्मकता पनपी है उसे दूर करना पड़ेगा एवं व्यवस्था की स्वीकार्यता बढ़ाने के लिए प्रयास करना पड़ेगा। सोशल मीडिया ने हमारी आक्रामकता को उजागर किया है लेकिन वह आक्रमकता नकारात्मक है उसे सकारात्मक बनाना आवश्यक है। युवाओं की दिशा यदि समाज के श्रेष्ठ लोग तय नहीं करेंगे तो वे कहीं न कहीं जाएंगे और भटकाव होगा। हमें वास्तविकतावादी बनना पड़ेगा। हमें आंदोलन का आकलन करना चाहिए एवं क्या खोया व क्या पाया इसकी समीक्षा होनी चाहिए। जीवन में एक ही चीज स्थायी है और वह है परिवर्तन। यदि हम परिवर्तन का अहसास नहीं करेंगे तो पिछड़ जाएंगे। युवाओं में प्रारम्भ से ही सही गलत का निर्णय करने की क्षमता विकसित की जानी चाहिए। हमें अंधकार की बात करने की अपेक्षा प्रकाश को बढ़ाने की बात करनी चाहिए। समाज में संगठनों के कारण बढ़ रहा विभाजन रोका जाना चाहिए। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीरसिंह सरवड़ी ने सामाजिक आंदोलनों पर संघ का दृष्टिकोण बताते हुए कहा कि विगत आंदोलनों के अनुभव से संघ की यह धारणा बनी है कि ऐसे किसी भी आंदोलन या मुद्दे पर बनने वाली विभिन्न संगठनों की केन्द्रीय समिति या निर्णय लेने वाली समिति में संघ शामिल नहीं होगा। यदि संघ ऐसे किसी भी आंदोलन को समाज के हित में समझेगा तो अपनी तरफ से स्वतः स्फूर्त सहयोग करेगा और यदि संघ को इसमें समाज हित नहीं लगेगा तो उदासीनता बरत कर अपनी असहमति प्रकट करेगा लेकिन सक्रिय विरोध कर समाज की शक्ति का विभाजन दिखाने से परहेज करेगा। कार्यक्रम के अंत में माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि आपकी चर्चा को सुनकर समझ में आया कि आप सभी श्रेष्ठ कार्य करना चाहते हैं ऐसे में ईश्वर का स्मरण रखते हुए इसे करें क्योंकि गीता में भगवान का आदेश है कि युद्ध कर और मेरा स्मरण कर। यदि हम ऐसा करेंगे तो ऐश्वर्य, विजय, ईश्वरीय विभूति एवं सदा रहने वाली शांति को प्राप्त होंगे। बैठक के उपरान्त भोजन के समय अनौपचारिक चर्चाओं में यह तय किया गया कि ऐसी बैठकें जिला स्तर पर आयोजित कर साझा समझ का प्रसार किया जाना चाहिए।

पथप्रेरक का...

डाक व्यवस्था की त्रुटि के कारण आप तक अंक नहीं पहुंचने की कुछ शिकायतें मिलती हैं जिन्हें आपके ही सहयोग से दूर करने का प्रयास किया जाता है। साथ ही इसके नवीनतम अंक सोशल मीडिया के माध्यम से भी आप तक पहुंचाने का प्रयास किया जाता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ की वेबसाईट एवं अधिकृत फेसबुक पेज पर भी यथासमय नवीनतम अंक प्रसारित किया जाता है। सम सामयिक समाचारों के साथ-साथ विभिन्न कॉलम के माध्यम से भी इसे समाज के लिए अधिकतम उपयोगी बनाने का प्रयास बदस्तूर जारी रहेगा। आप सब अपना सहयोग एवं आशीर्वाद बनाए रखें।

पराक्रम ने बढ़ाया मान

पचलंगी निवासी राजेन्द्रसिंह एवं तारा कंवर के पुत्र पराक्रमसिंह ने इस वर्ष गणतंत्र दिवस परेड में एनसीसी की तरफ से राजस्थान का प्रतिनिधित्व कर परिवार व समाज का मान बढ़ाया है। पराक्रम गणतंत्र दिवस कैम्प में राजस्थान गार्ड ऑफ ऑनर का भी हिस्सा रहे। RAJ AIRWING NCC जयपुर के केडेट पराक्रम को उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं।

अक्षय प्रताप सिंह को स्वर्ण पदक

एनसीसी कैडेट अक्षय प्रताप सिंह को गणतंत्र दिवस के अवसर पर बेहतरीन ढंग से नैवल शिप मॉडलिंग प्रदर्शन करने पर नौसेना प्रमुख एडमिरल पुनीत लांबा ने स्वर्ण पदक से सम्मानित किया। मिंढ़ा निवासी माधोसिंह राजावत एवं कैलाश कंवर के पुत्र अक्षय प्रताप को पावर मॉडल डिस्प्ले में कांस्य पदक मिला है।

(पृष्ठ चार का शेष)

मूर्तियों के... वास्तव में ये या तो लोगों की भावनाओं के शोषण के बहाने तैयार करने के लिए लगाई गई हैं या फिर राज में भागीदारी हासिल कर तैयार हुए नए कुलीन वर्ग के अहं को तुष्ट करने के लिए लगाई गई हैं। ऐसे में हमारे लिए सावधानी का विषय यह है कि कहीं कोई हमारा तो किसी मूर्ति के बहाने भावनात्मक शोषण नहीं कर रहा है या हम तो किसी मूर्ति को हमारे अहंकार की तुष्टि का माध्यम नहीं बना रहे हैं।

गौरक्षक मायथी जी की जयंती मनाई

श्री क्षत्रिय युवक संघ के रामगढ़ (जैसलमेर) प्रांत के तत्वावधान में 4 मार्च रविवार को रामगढ़ से 7 किमी दूर मायथी जी की डूंगरी में गौरक्षक मायथी जी का जयंती समारोह धूमधाम से मनाया गया। पाटन (गुजरात) के शासक मूलराज द्वितीय की वंश परम्परा में हुए मायथी जी बकराथला खडीन विपरासर (वर्तमान नेतसी, जैसलमेर) में निवास करते थे। सिंध क्षेत्र के बलोच लुटेरे अक्सर इस क्षेत्र में लूटपाट करते रहते थे। संवत् 1369 में ऐसे ही लुटेरों द्वारा लूट कर ले जा रही गायों की रक्षा करते हुए वीर क्षत्रिय मायथी जी काम आए थे। उन्होंने संघर्ष कर गायें तो छुड़ा ली लेकिन वे इस संघर्ष में काम आए। उनका एक अंग मायथी जी की डूंगरी पर गिरा उनका जहां स्मारक बना हुआ है। उनका सिर मायथी जी के डेहरी में गिरा वहां भी उनका स्मारक बना हुआ है। उनका धड़ लुटेरों का पीछा करता हुआ रहीमयार खान (पाकिस्तान) में जाकर गिरा, वहां भी उनका स्मारक बना हुआ है। इस प्रकार तीनों जगह स्मारक बना हुआ है एवं उनकी पूजा की जाती है। उनका विवाह नहीं हुआ था, युद्ध करने वे दुल्हे का वेश बनाकर गए थे। उनके सिर के साथ उनकी माता सज्जन कंवर सती हुई थीं, उस स्थान पर सती माता का भी थान बना हुआ है। विगत वर्षों से माननीय संघ प्रमुख श्री के निर्देश पर संघ हमारे स्थानीय जूंझारों एवं वीरों की जयंती मनाता है इसी कड़ी में 4 मार्च को इनकी जयंती मनाई जिसमें आसपास के सैंकड़ों लोग उपस्थित रहे। जयंती समारोह को संघ के जैसलमेर संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा, विधायक छोटूसिंह भाटी, पूर्व विधायक सांगसिंह भाटी, प्रदेश कांग्रेस महासचिव सुनीता कंवर भाटी, व्याख्याता चतरसिंह सोलंकी, सुजानसिंह हुड्डा, गोवर्धनसिंह अर्जुना, आईदानसिंह हाबूर, देरावरसिंह सलखा, निरंजन भारती, किशनगिरी आदि ने संबोधित किया। सभी ने वीर मायथी जी के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने कर्तव्य के पालन की बात कही। मायथी जी की स्मृति में ऐसा आयोजन पहली बार हुआ। इसे भविष्य में और भव्य रूप में मनाने की सहमति बनी। आज भी लोग प्रतिमाह भरने वाले मेले में उनका स्मरण करते हैं। विशेष तौर पर पशुपालक अपने पशुओं के स्वास्थ्य की कामना लिए उनकी पूजा करते है।

देवगढ़ घराने की बहु का सेवा का जज्बा

राजसमंद स्थित देवगढ़ के पूर्व राजघराने की बहु नम्रता कुमारी विगत छह वर्षों से नगर के सरकारी बालिका विद्यालय में कक्षा 11 व 12 की बालिकाओं को निःशुल्क अंग्रेजी पढ़ा रही है। नम्रता कुमारी की इस सेवा भावना पर एक समाचार पत्र में समाचार छपने से अनेक लोग उनकी सेवा भावना के जज्बे को सराह रहे हैं।

गुजरात...

प्रवीणसिंह के अलावा निम्न राजपूत चयनित हुए हैं :

1.	चूड़ासमा कुमारी निशा बा जितेन्द्रसिंह	11वीं रैंक
2.	जादव ऋतुराजसिंह रामदेवसिंह	14वीं रैंक
3.	सिसोदिया मैत्रयी देवी निष्कंभकुमार सिंह	19वीं रैंक
4.	परमार विश्वजीतसिंह कुलजीतसिंह	26वीं रैंक
5.	गोहिल युवराजसिंह अनिरुद्धसिंह	28वीं रैंक
6.	झाला शिवपालसिंह नारूभा	30वीं रैंक
7.	गोहिल कुमारी मृणालदेवी अशोकसिंह	35वीं रैंक
8.	जाड़ेजा कुमारी हिना बा जगदीशसिंह	39वीं रैंक
9.	वाघेला विश्वदीपसिंह महिपतसिंह	42वीं रैंक
10.	वाघेला यशोराजसिंह किरणसिंह	46वीं रैंक
11.	परमार कनकसिंह देवीसिंह	48वीं रैंक
12.	गोहिल शक्तिसिंह अरविंदसिंह	51वीं रैंक
13.	राजपूत अक्षयसिंह जवाहरसिंह	120वीं रैंक
14.	जाड़ेजा युवराजसिंह प्रवीणसिंह	124वीं रैंक
15.	वाघेला संकेतसिंह प्रद्युम्नसिंह	128वीं रैंक
16.	जाड़ेजा डॉ. अंकिता बा अशोकसिंह	133वीं रैंक
17.	झाला कु. राजेश्वरी बा गिरिराजसिंह	141वीं रैंक
18.	चौहान युवराजसिंह नटवरसिंह	177वीं रैंक
19.	झाला पृथ्वीराजसिंह बलभद्रसिंह	178वीं रैंक
20.	चावड़ा भरतसिंह चतुरसिंह	181वीं रैंक
21.	सोलंकी रघुवीरसिंह राजेन्द्रसिंह	182वीं रैंक
22.	चुड़ासमा कुमारी रिद्धि बा महिपतसिंह	234वीं रैंक

यह सूची बेबसाइट पर उपलब्ध जानकारी के आधार पर स्थानीय लोगों से पूछकर बनाई गई है फिर भी प्रमाणिक जानकारी के लिए व्यक्तिगत सम्पर्क करना चाहिए।

दोहरी बातें न करें जनप्रतिनिधि : महेन्द्रसिंह मेवाड़

हमारे जनप्रतिनिधियों एवं अन्य लोगों को दोहरी बातें नहीं करनी चाहिए। वे जब मन में आवे तो प्रताप का जयकारा लगाते है, मेवाड़ में आते है तो मेवाड़ के इतिहास की बातें करते है और दिल्ली जाते ही सब गोलमाल हो जाता है। इस प्रकार की सुविधा की राजनीति का विषय नहीं है इतिहास। 13 मार्च को चित्तौड़गढ़ दुर्ग में आयोजित जौहर श्रद्धांजलि समारोह को संबोधित करते हुए मेवाड़ के पूर्व महाराणा महेन्द्रसिंह मेवाड़ ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि हम जिसे सदियों से हमारा गौरवशाली इतिहास मान रहे हैं, उससे प्रेरणा ले रहे हैं आज हर कोई उसे बदलने पर तुला है, हर कोई इतिहासकार बन रहा है, इससे विसंगति पैदा होगी और राष्ट्र की हानि होगी। इस बार समारोह में केवल उन्हीं राजनेताओं को बुलाया गया जिन्होंने पद्मावती मुद्दे पर मेवाड़ के इतिहास के रक्षण की बात कही थी। महामंडलेश्वर चेतनदास महाराज ने कहा कि जौहर शब्द आत्म बलिदान का प्रतीक है। इसे इसी रूप में प्रचारित किया जाना चाहिए. सनातन संस्कृति की रक्षा में राजपूत समाज सदैव अग्रणी रहा है। इनके

अलावा विश्वजीतसिंह मेवाड़, सांसद सी.पी. जोशी, विधायक चन्द्रभानसिंह आक्या, जौहर स्मृति संस्थान के अध्यक्ष उम्मेदसिंह धौली, अनुजदास, राणा सांगा स्मृति संस्थान खानवा के अध्यक्ष हरिओम सिंह जादौन आदि ने उद्बोधन दिए। भीलवाड़ा जिला प्रमुख शक्तिसिंह हाड़ा, प्रधान प्रवीणसिंह राठौड़, भाजपा उपाध्यक्ष भगवती देवी झाला, तेजसिंह बांसी, कर्नल रणधीरसिंह आदि भी उपस्थित रहे। समारोह से पूर्व शहर में शोभायात्रा निकाली गई जिसमें राजपरिवार के साथ-साथ स्थानीय लोग पारम्परिक वेशभूषा में शामिल हुए। समारोह में आईओसी निदेशक धर्मेन्द्रसिंह ने बताया कि दुर्ग पर पर्यटक सुविधाओं के लिए नौ करोड़ रुपए खर्च होंगे।

जयमल कोट में अध्यक्ष को श्रद्धांजलि

राजपूत सेवा सदन जयमल कोट पुष्कर के अध्यक्ष एवं पंजाब के राज्यपाल वी.पी. सिंह के भाई रघुराजसिंह बदनौर को श्रद्धांजलि देने हेतु 11 मार्च रविवार को पुष्कर के जयमल कोट परिसर में श्रद्धांजलि सभा रखी गई एवं पुष्पांजलि अर्पित की गई। कर्नल रघुराजसिंह गोयला, तेजसिंह थिलावट, भूपेन्द्रसिंह सावर, महेन्द्रसिंह रलावता, दशरथसिंह पिचोलिया, महेन्द्रसिंह कड़ेल आदि इस अवसर पर उपस्थित रहे। रघुराजसिंह का 6 मार्च को देहांत हुआ था।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com , Web site:- www.shrikys.org